5 भारत शिररत्न : भरत

जयशंकर प्रसाद

(जन्म : सन् 1889, मृत्यु : सन् 1937 ई.)

छायावाद के प्रमुख कवि, नाटककार और कहानीकार जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी (वाराणसी) के एक सुप्रतिष्ठित वैश्य सुँधनी साहु के परिवार में हुआ था। 12 साल की उम्र में पिता के निधन से पारिवारिक जिम्मेदारी की वजह से मिडल के आगे पढ़ाई न कर सके। उन्होंने संस्कृत, फारसी, ऊर्दू और अंग्रेजी का अध्ययन घर पर ही किया। वे दर्शन, पुराण, इतिहास एवं पुरातत्त्व के विद्वान थे।

प्रसादजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। छायावादी कविता को उन्होंने विकास के उन्नत शिखर तक पहुँचाया। 'कामायनी' उनकी सर्वोत्कृष्ट रचना है। इसके अतिरिक्त 'लहर', 'झरना' एवं 'आँसू' उनकी उत्तम काव्य-कृतियाँ हैं। 'स्कंदगुप्त', 'चंद्रगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी' तथा 'अजातशत्रु' उनके श्रेष्ठ नाटक हैं 'कंकाल' तथा 'तितली' उनके दो उपन्यास हैं। 'आँधी' एवं 'आकाशदीप' उनके कहानी संग्रह हैं।

प्रसादजी मुख्यत: प्रेम और सौंदर्य के कवि हैं। उनकी कविताओं में लौकिक प्रेम की अभिव्यंजना, प्रकृति एवं नारी सौंदर्य का चित्रण, प्रभु के प्रति आत्म-निवेदन और भारत के गौरवमय अतीत के प्रति आकर्षण व्यक्त हुआ है। उनकी भाषाशैली अत्यन्त प्रौढ़, परिष्कृत और साहित्यिक है।

प्रस्तुत कविता 'चित्राधार' से ली गई है। कवि ने दुष्यंत और शकुंतला के पुत्र भारत की निर्भीकता का सजीव वर्णन किया है। शेर के मुँह में से दाँत गिननेवाला यह बालक आगे चलकर भरत के नाम से जाना गया। इसी के नाम से भारत देश का नामकरण हुआ।

अहा! खेलता कौन यहाँ शिशु सिंह से,
आर्य वृन्द के सुंदर सुखमय भाग्य-सा!
कहता है उसको लेकर निज गोद में -
''खोल, खोल मुख सिंह बाल, मैं देखकर
गिन लूँगा तेरे दाँतों को हैं, भले,
देखूँ तो कैसे यह कुटिल कठोर हैं!''
देख वीर बालक के इस औद्धत्य को
लगी गरजने भरी सिंहनी क्रोध से।
छड़ी तानकर बोला बालक रोष से -
''बाधा देगी क्रीड़ा में यदि तू कभी
मार खाएगी, और तुझे दूँगा नहीं-
इस बच्चे को; चली जा अरी भाग जा!''
अहा, कौन यह वीर बाल निर्भीक है
कहो भला भारतवासी! हो जानते,
यही 'भरत' वह बालक है, जिस नाम से
'भारत' संज्ञा पड़ी इसी वरभूमि की।
कश्यप के गुरुकुल में शिक्षित हो रहा
आश्रम में पलकर, कानन में घूम कर,
निज माता की गोद मोद भरता रहा
जो पति से थी बिछुड़ गई दुर्दैववश!
जंगल के शिशु सिंह सभी सहचर रहे
रहा घूमता हो निर्भीक प्रवीर यह,
जिसने अपने बलशाली भुजदण्ड से
भारत का साम्राज्य प्रथम स्थापित किया।
वही वीर यह बालक है दुष्यन्त का
भारत का शिररत्न 'भरत' शुभ नाम है।

(चित्राधार)

शब्दार्थ और टिप्पणी

औद्धत्य धृष्टता, उज्जडता **क्रीड़ा** खेल **निर्भीक** निडर, **कानन** जंगल **दुर्दैववश** दुर्भाग्य से **मोद** आनंद **आर्यवृंद** समस्त आर्यजाति **कुटिल** टेढ़ा **सहचर** साथी **प्रवीर** प्रबल वीर **भुजदंड** भुजाएँ **शिररत्न** सर्वश्रेष्ठ, नायक

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(1) शिशु सिंह के साथ कौन खेल रहा था?

(क) बालक भरत (ख) बालक राम (ग) बालक कृष्ण (घ) बालक गणेश

(2) बालक किसके आश्रम में पढ़ रहा था?

(क) द्रोणाचार्य के (ख) कश्यप के (ग) गौतम के (घ) दुर्वासा के

(3) बालक भरत का सहचर कौन था?

(क) शिशुसिंह (ख) शेर (ग) हाथी (घ) बंदर

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) शिशु सिंह के साथ बालक क्या कर रहा था?

(2) बालक का लालन-पालन कहाँ हुआ?

(3) बालक भरत के माता-पिता कौन थे?

(4) भारत का प्रथम साम्राज्य किसने स्थापित किया?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्य में दीजिए :

(1) सिंहनी क्यों गर्जने लगी?

(2) बालक ने क्रोधित सिंहनी से क्या कहा?

(3) शकुन्तला अपने पति से क्यों बिछुड़ गई थी?

(4) शिशु सिंह को गोद में लेकर बालक ने क्या कहा?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच पंक्तियों में लिखिए :

(1) बालक भरत की निर्भीकता का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(2) 'भारतरत्न : भरत' कविता का भावार्थ लिखिए।

(3) बालक भरत का लालन-पालन कैसे हुआ?

योग्यता-विस्तार

(1) **विद्यार्थी प्रवृत्तिः** जयशंकर प्रसाद का 'चित्राधार' काव्य-संग्रह प्राप्त करके पढ़िए।

(2) **शिक्षक प्रवृत्तिः** भरत के विषय में जानकारी प्राप्त करके कक्षा में सुनाइए।